(२) गर्भ कल्याणक आ गया...

गर्भ–कल्याणक आ गया,
देखो देखो देखो जी आनन्द छा गया ॥ टेक ॥

स्वर्गपुरी से देवगति को तजकर प्रभु ने नरगति पाई;
धन्य–धन्य हैं त्रिशला माता तीर्थङ्कर की माँ कहलाई;
कुण्डलपुर में आनन्द छा गया ॥ 1 ॥

सोलह सपने माँ ने देखे मन में अचरज भारी है;
सिद्धारथनृप से फल पूछा उपजा आनन्द भारी है;
तीन भुवन का नाथ आ गया ॥ 2 ॥

अन्तिम गर्भ हुआ प्रभुजी का अब दूजी माता नहीं होगी;
शुद्धातम के अवलम्बन से आत्मसाधना पूरी होगी;
ज्ञान–स्वभाव हमें भा गया ॥ 3 ॥